**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 6, June - 2023 Publication Date: 30/06/2023

DOIs:10.2018/SS/202306017 --:-- Research Paper / Article / Review

# मनौज्ञानिक परीक्षण से स्थापित व्यक्तित्वशील गुणों एवं जन्म-कुण्डली से प्राप्त व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

**Dr.Rashmi Bala**
Asst. Professor, Chandrasheel College of Education, Kanti Muzaffarpur, Bihar
Email: rashmibala091@gmail.com

**शोध -आलेख सार :** मानव सभ्यता ने जब पहली बाद अपनी आँखे खोली तो गगन मंडल में उसने अनेक ग्रहों, नक्षत्रों एवं तारों को चमकते हुए देखा। साथ ही यह भी देखा कि से सभी एक निश्चित समय में गतिशील है तो इसका रहस्त जानने के लिए वह उत्कंठित हो उठा और उसने यह जानना चाहा कि यह क्या है और क्यों गतिशील हैं व इसका मानव और उनके जीवन से क्या सम्बन्ध है ? ग्रहों के भ्रमण से ही ऋतुएं एवं मास आदि का अंतर बनता है, इन ग्रहों के प्रभाव के फलस्वरूप ही मानव जीवन में अंतर पाया जाता है तथा उस ग्रह के प्रभाव से ही मानव की प्रकृति स्वभाव व क्रियाकलाप बन जाते हैं। अंश के आधार पर ग्रहों की दूरी, आकर्षण-विकर्षण व चुम्बकीय शक्ति, आदि का ज्ञान किया जा सकता है। मनुष्य के समस्त कार्य ज्योतिष द्वारा ही चलते हैं। व्यवहार के लिए अत्यंत उपयोगी दिन, सप्ताह, मास, पक्ष, ऋतु, वर्ष एवं तिथि आदि का ज्ञान इसी शास्त्र द्वारा होता है।यदि ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान नहीं होता तो वेद की प्राचीनता कदापि सिद्ध नहीं की जा सकती।"मनोविज्ञान" यह एक व्यवहार विज्ञान है जिसका उद्देश्य व्यवहार का अध्ययन करना है। इसमें व्यक्तियों एवं पशुओं के व्यवहारों का अध्ययन, भविष्यवाणी व समस्या का समाधान किया जाता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली दोनों का ही अध्ययन क्षेत्र बहुत विशाल है। अतः इस बात को ध्यान में रखकर समस्या का चयन किया जिसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली से प्राप्त व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया। उद्देश्य-प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह देखना है कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली द्वारा प्राप्त व्यक्तित्व शील गुणों में कितनी समानता है। परिकल्पना- छात्र-छात्राओं के मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली द्वारा प्राप्त व्यक्तित्व शील गुणों में कोई अंतर नहीं होता है। न्यादर्श-प्रस्तुत शोध कार्य में कुल 10 महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं को लिया गया जिसमें 5 छात्र एवं 5 छात्राएं थीं । छात्र-छात्राओं की उम्र 18 से 25 वर्ष थी । उपकरण-16 व्यक्तित्व कारक मापनी - एस.डी. कपूर जन्म-कुण्डली बनाने के लिए "कुण्डली लाइट, विन्डो सोफ्टवेयर" का उपयोग किया गया। व्यक्तित्व शील गुणों के मापन हेतु कैटेल की 16 व्यक्तित्व मापनी के हिन्दी अनूकूलन का उपयोग किया गया है, निष्कर्ष-मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली के माध्यम से प्राप्त किये गये व्यक्तित्व शील गुणों मे कोई अंतर नही होता है।

**मुख्य-शब्द :** मनौज्ञानिक परीक्षण, स्थापित व्यक्तित्वशील गुणों, जन्म-कुण्डली ।

## 1. प्रस्तावना:

मानव सभ्यता ने जब पहली बाद अपनी आँखे खोली तो गगन मंडल में उसने अनेक ग्रहों, नक्षत्रों एवं तारों को चमकते हुए देखा। साथ ही यह भी देखा कि से सभी एक निश्चित समय में गतिशील है तो इसका रहस्त जानने के लिए वह उत्कंठित हो उठा और उसने यह जानना चाहा कि यह क्या है और क्यों गतिशील हैं व इसका मानव और उनके जीवन से क्या सम्बन्ध है ? धीरे-धीरे मानव सभ्यता विकसित हुई और उसने पाया कि से ग्रह दूर रहते हुए भी परस्पर एक-दूसरे से सम्बन्धित है और इन ग्रहों के भ्रमण से ही ऋतुएं एवं मास आदि का अंतर बनता है, इसके बाद मानव ने इस बारे में विशेष खोज प्रारंभ की तो उसने पाया कि से सभी ग्रह सामान्य गतिशील ही नहीं अपितु इनका प्रभाव जीवन पर भी बराबर पड़ रहा है। इन ग्रहों के प्रभाव के फलस्वरूप ही मानव जीवन में अंतर पाया जाता है तथा उस ग्रह के प्रभाव से ही मानव की प्रकृति स्वभाव व क्रियाकलाप बन जाते हैं।जन्म-कुण्डली में 12 भाग होते हैं, ये एक प्रकार से पूरे आकाश को 12 भागों में विभाजित करते हैं, जिससे आकाश में स्थित ग्रहों को भली प्रकार से समझा जा सके। पूरा आकाश मंडल 360

अंशों में विभक्त है। इसे 12 भागों में बांटने पर प्रत्येक भाग 30 अंश का बन जाता है। इस प्रकार अंश के आधार पर ग्रहों की दूरी, आकर्षण-विकर्षण व चुम्बकीय शक्ति, आदि का ज्ञान किया जा सकता है।

मनुष्य के समस्त कार्य ज्योतिष द्वारा ही चलते हैं। व्यवहार के लिए अत्यंत उपयोगी दिन, सप्ताह, मास, पक्ष, ऋतु, वर्ष एवं तिथि आदि का ज्ञान इसी शास्त्र द्वारा होता है। यदि मानव समाज को इसका ज्ञान न हो तो धार्मिक स्वभाव, सामाजिक त्यौहार, प्राचीन गौरव गाथा आदि किसी भी बात का ठीक-ठीक पता नहीं चल सकेगा। यदि ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान नहीं होता तो वेद की प्राचीनता कदापि सिद्ध नहीं की जा सकती। इस शास्त्र की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि यह समस्त मानव जीवन के प्रत्येक रहस्यों का विवेचन करता है। जिस प्रकार दीपक अंधकार में रखी वस्तु को दिखलाता है ठीक उसी प्रकार ज्योतिष मानव जीवन के रहस्यों का विवेचन करता है।

"मनोविज्ञान" यह एक व्यवहार विज्ञान है जिसका उद्देश्य व्यवहार का अध्ययन करना है। इसमें व्यक्तियों एवं पशुओं के व्यवहारों का अध्ययन, भविष्यवाणी व समस्या का समाधान किया जाता है।

"व्यक्तित्व" के सम्बन्ध में मनुष्य आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में विचार करता रहा है। दरअसल व्यक्ति जो व्यवहार करता है वही उसका व्यक्तित्व है। जब हम व्यक्तित्व के स्वरूप का अध्ययन करते हैं, तो किसी ऐसे व्यक्ति का ध्यान आता है जो सहज ही दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

विविध स्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार की संगति को "शील गुण" कहते हैं। जैसे - कठोरता, विनम्रता, संवेगात्मकता, अंतर्मुखता, बर्हिमुखता, आदि ऐसे अनेक शील गुण हैं जिनके आधार पर हम व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन करते हैं।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली दोनों का ही अध्ययन क्षेत्र बहुत विशाल है। दोंनो ही विषय पूर्णतः वैज्ञानिक व विश्वसनीय है। यह सर्वविदित है कि वर्तमान युग सामाजिक प्रगति एवं प्रतिस्पर्धा का युग है। इस युग में प्रत्येक व्यक्ति द्वंद्व व चिन्ता में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है, जिसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ रहा है। इस विकृत व्यक्तित्व के साथ प्रगति एवं विकास असंभव है। अतः इस बात को ध्यान में रखकर समस्या का चयन किया जिसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली से प्राप्त व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।

## 2. उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह देखना है कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली द्वारा प्राप्त व्यक्तित्व शील गुणों में कितनी समानता है।

## 3. परिकल्पना :

छात्र-छात्राओं के मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली द्वारा प्राप्त व्यक्तित्व शील गुणों में कोई अंतर नहीं होता है।

## 4. न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध कार्य में कुल 10 महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं को लिया गया जिसमें 5 छात्र एवं 5 छात्राएं थीं । छात्र-छात्राओं की उम्र 18 से 25 वर्ष थी ।

## 5. उपकरण :

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्न अनुसंधान उपकरणों का प्रयोग किया गया:

1. 16 व्यक्तित्व कारक मापनी - एस.डी. कपूर
2. जन्म-कुण्डली

इसमें 3 चीजों का ध्यान रखा गया -

1. जन्म तिथि - जिसमें जन्म तारीख, महीना व वर्ष लिया गया ।
2. जन्म समय - इसमें जन्म-धण्टा, मिनट, दिन व रात लिया गया।
3. जन्म स्थान - इसमें शहर, गाँव या जिले का नाम लिख गया।

जन्म-कुण्डली बनाने के लिए "कुण्डली लाइट, विन्डो सोफ्टवेयर" का उपयोग किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया गया है कि क्या मनावैज्ञानिक परीक्षणों से प्राप्त शील गुणों एवं जन्म-कुण्डली से ज्ञात किये गये शील गुणों में कोई समानता होती है ? यदि कोई समानता होती है तो केवल एक के ही माध्यम से व्यक्तित्व व शील गुणों के बारे में बताया जा सकता है। अध्ययन में व्यक्तित्व शील गुणों के मापन हेतु कैटेल की 16 व्यक्तित्व मापनी के हिन्दी अनूकूलन का उपयोग किया गया है, एवं इनमें से अध्ययन हेतु केवल उन शील गुणों को लिया गया है जिनका जन्म-कुण्डली के माध्यम से मापन हो सकता है जिससे की दोनों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया जा सके।

## 6. विधि:

सर्वप्रथम न्यादर्श में चुने गये छात्र-छात्राओं की वास्तविक जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान के बारे में सही-सही जानकारी छात्र-छात्राओं के अभिभावकों से ली गई एवं "कुण्डली लाइट विन्डो सोफ्टवेयर" के माध्यम से जन्म कुण्डली का निर्माण किया गया। फिर इन्हीं छात्र-छात्राओं के ऊपर 16 व्यक्तित्व कारक मापनी का प्रशासन किया गया एवं अध्ययन हेतु केवल 7 कारकों को लिया गया जो इस प्रकार है:

। - अंतर्मुखी विरूद्ध बर्हिमुखी, ठ - कम बुद्धिमान विरूद्ध बुद्धिमान, म् - विनम्र विरूद्ध आक्रामक, प् - दृढ़ विरूद्ध भावुक, स् - विश्वसनीय विरूद्ध शंकालु, ड - व्यवहारिक विरूद्ध कल्पनाशील, फ2 - समूह पर निर्भर विरूद्ध आत्मनिर्भर।

इसके बाद फलांकन किया गया, फलांकन के उपरांत सातों कारकों के प्राप्तांकों को "स्टेन स्कोर" में परिवर्तित किया गया।

जन्म-कुण्डली में विभिन्न शील गुणों के अध्ययन के लिए ग्रहों के अध्ययन के आधार पर एक पार्श्व चित्र (प्रोफाइल) बनाया गया जिसके आधार पर शील गुणों के फलांकन के लिए उच्च, औसत एवं निम्न श्रेणी में वर्गीकृत किया गया।

## परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन में लिये गये 7 कारकों का मापन 16 व्यक्तित्व कारक मापनी एवं जन्म-कुण्डली के आधार पर प्राप्तांकों को "स्अेन स्कोर" में परिवर्तित करके किया गया। व्यक्तित्व मापनी एवं जन्म-कुण्डली के मध्य सांख्यकीय दृष्टिकोण से अंतर निम्नांकित सारणी में प्रदर्शित किया गया है:

**तालिका**

**व्यक्तित्व मापनी एवं जन्म-कुण्डली के तुलनात्मक परिणाम**

| शील गुण | कोड | मापन की प्रकृति मान | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | 'टी' मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्तर्मुखी विरूद्ध | 1 | मनो. परीक्षण | 10 | 5.20 | 1.32 | 0.28 | सार्थक नहीं |
| बर्हिमुखी | | जन्म कुण्डली | 10 | 5.40 | 1.66 | | |
| कम बुद्धिमान विरूद्ध | ठ | मनो. परीक्षण | 10 | 4.60 | 2.72 | 0.79 | सार्थक नहीं |
| अधिक बुद्धिमान | | जन्म कुण्डली | 10 | 3.60 | 2.52 | | |
| विनम्र विरूद्ध | म् | मनो. परीक्षण | 10 | 5.50 | 1.11 | 1.11 | सार्थक नहीं |
| आक्रामक | | जन्म कुण्डली | 10 | 4.60 | 2.18 | | |
| दृढ़ विरूद्ध | प् | मनो. परीक्षण | 10 | 5.40 | 1.35 | 1.31 | सार्थक नहीं |
| भावुक | | जन्म कुण्डली | 10 | 4.40 | 1.85 | | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विश्वसनीय विरूद्ध | स् | मनो. परीक्षण | 10 | 6.40 | 1.35 | 2.00 | सार्थक नहीं |
| शंकालू | | जन्म कुण्डली | 10 | 7.60 | 1.20 | | |
| व्यवहारिक विरूद्ध | ड | मनो. परीक्षण | 10 | 5.50 | 1.43 | 0.50 | सार्थक नहीं |
| कल्पनाशील | | जन्म कुण्डली | 10 | 5.80 | 1.13 | | |
| छूसरों पर निर्भर विरूद्ध | फ2 | मनो. परीक्षण | 10 | 6.90 | 1.22 | 1.75 | सार्थक नहीं |
| आत्मनिर्भर | | जन्म कुण्डली | 10 | 5.60 | 1.85 | | |

स्वतंत्रता के अंश - 18 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.09

उपर्युक्त परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्तित्वशील गुणों एवं जन्म-कुण्डली से उपरोक्त कारकों के तुलनात्मक अध्ययन में सांख्यकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं आया है क्योंकि सभी टी-मान सार्थकता के लिए न्यूनतम निर्धारित मान की अपेक्षा कम है। अतः पूर्व में ली गई परिकल्पना सत्यापित होती है।

अतः इस विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि जन्म-कुण्डली के माध्यम से भी लभगभ उतनी ही सत्यता से शीन गुणों को मापन किया जा सकता हैं। जितना कि मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से । विश्पस्त, अनुभवी एवं विद्वान ज्योतिषियों द्वारा समय-समय पर जो विभिन्न भविष्यवाणियाँ की जाती हैं, उनके सत्य निकलने का एक प्रमुख कारण ग्रहों की स्थिति के आधार पर पूर्वकथन करना है जो कि एक पूर्णतः वैज्ञानिक पद्धति है। संभवतः इसलिए प्रस्तुत शोध में परीक्षण परिणामों एवं जन्म-कुण्डली से प्राप्त परिणामों में समानता है परन्तु यह सावधानी रखना आवश्यक है कि यदि केवल जन्म-कुण्डली के आधार पर ही व्यक्तित्व का आकलन किया जाना है तो आकलनकर्ता अनुभवी एवं विद्वान होना चाहिए। इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर निम्नांकित निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

## निष्कर्ष :

मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं जन्म-कुण्डली के माध्यम से प्राप्त किये गये व्यक्तित्व शील गुणों मे कोई अंतर नही होता है।

## संदर्भ :

1.जायसवाल, डॉ सीताराम (1999)- व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, प्रथम संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2.मखीजा, डॉ गोपाल कृष्ण (1986)- मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकीय, प्रथम संस्करण, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल।
3.शर्मा डॉ. रामनाथ (1983)- व्यक्तित्व, द्वितीय संस्करण, केदारनाथ रामनाथ, मेरठ।
4.श्रीमती डॉ. नारायणदत्त (1999)- कुण्डली दर्पण, आनंद पेपरवैक्स, दिल्ली।
5.शास्त्री डॉ. नेमीचंद (1999)- भारतीय ज्योतिष, अट्ठाईसवाँ संस्करण, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली।